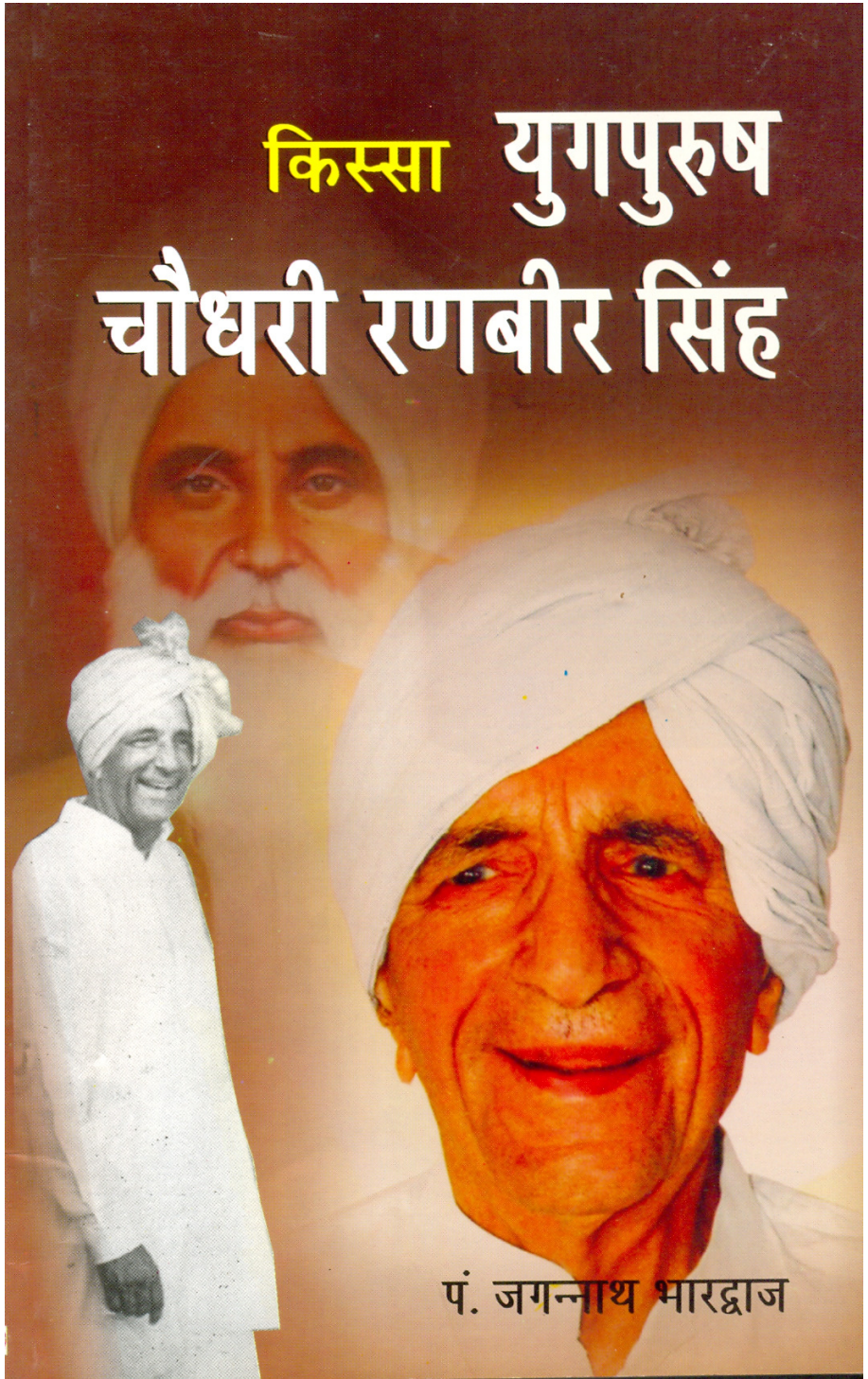

किस्सा

युगपुरुष चौ. रणबीर सिंह

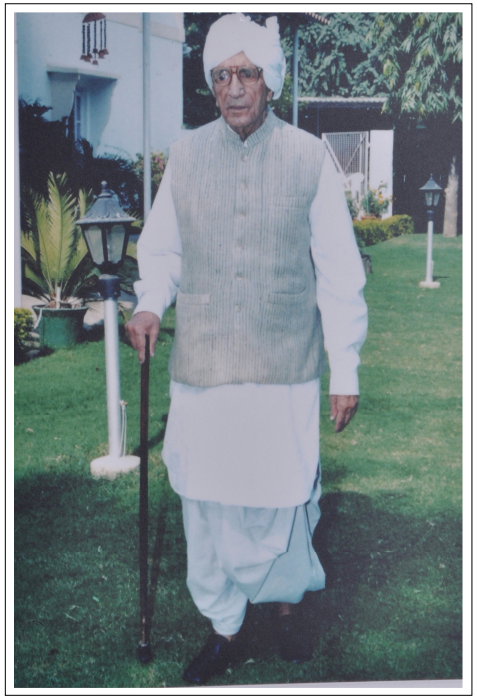

चौ. रणबीर सिंह (1914–2009)

किस्सा
युगपुरुष चौ. रणबीर सिंह

लेखक
पं. जगन्नाथ भारद्वाज

चौ. रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय
रोहतक

सौजन्य

अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी
उत्तराधिकारी संगठन, नई दिल्ली

© चौ. रणबीर सिंह पीठ I 2010

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। पुस्तक का कोई भी अंश लेखक की लिखित अनुमति के बिना किसी भी तरह से इस्तेमाल में नहीं लाया जा सकता है।

प्रकाशक
चौ. रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय
रोहतक

मुद्रक
विकास कम्प्यूटर्स एवं प्रिंटर्स,
शहादरा, दिल्ली

विषय सूची

आमुख
श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, मुख्यमंत्री, हरियाणा 7

प्रतिपाद्य
डॉ. आर. पी. हुड्डा,
कुलपति, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक 9

प्राक्कथन
पं. जगन्नाथ भारद्वाज 11

प्रस्तावना
प्रो. के.सी. यादव 15

आभार
श्री ज्ञान सिंह,
अध्यक्ष, चौ. रणबीर सिंह पीठ,
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक 19

किस्सा
युगपुरूष चौ. रणबीर सिंह 21

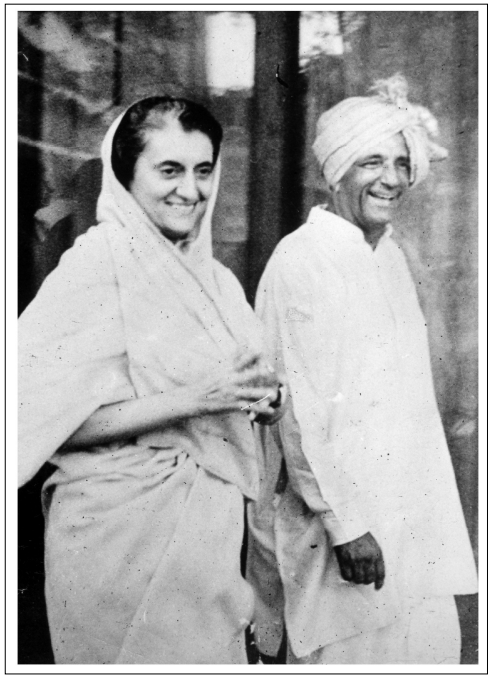

चौधरी साहब श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के साथ

भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
मुख्यमंत्री, हरियाणा

कार्यालय,
मुख्यमंत्री, हरियाणा
चण्डीगढ़

14 जनवरी 2010

आमुख

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक की चौ. रणबीर सिंह पीठ के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन *'किस्सा, चौ. रणबीर सिंह'* से सम्बद्ध होकर मुझे बेहद प्रसन्नत हो रही है। 'लोक साहित्य' को हम 'धरती–जन्मा' कहते हैं, क्योंकि इस में धरती पुत्रों/पुत्रियों की वाणी अनुगुंजित होती है, जिस में जन भावनाओं, इच्छाओं, आक्षाओं की नैसर्गिक प्रतिध्वनि सुनी जा सकती है। यही कारण है कि यह विधा हर व्यक्ति, हर समाज, हर प्रदेश के लोगों को अत्यन्त भली लगती है। हमारा, हरियाणावासियों का, तो इस से विशेष लगाव है, क्योंकि, इतिहासकार कहते हैं, कि हमारे पुरखों ने ही हजारों वर्ष पहले इसे परवान चढ़ाया था। गुप्तकाल के एक लोकप्रिय ग्रंथ, *पादताडितकम्* में कहा गया है कि रोहतक नगर के मृंदगिये और लोगों (यौद्यियों) के गीत दूर–दूर तक प्रसिद्ध थेः

अयेन खलु रोहितकी यैर्मादंगिकैः कांस्यपत्र
वेणुविश्रैया धेयकवर्णरूप गीयमानः ..... ।।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है, विशेषकर मेरे लिये, कि हरियाणा
की इस ऐतिहासिक लोकप्रिय विधा (लोक गीत) के माध्यम से मेरे पिता जी, पूज्य चौ. रणबीर सिंह जी के जीवन तथा देश के हित और जन कल्याण के लिए किए उन द्वारा गए कार्यों पर विशेष प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

चौधरी साहब महात्मा गांधी जी के अनन्य भक्त थे। गांधी जी के नेतृत्व में उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए खूब काम किया और जेलें काटीं। पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, डॉ. भीमराव अम्बेडकर सरीखे दिग्गज नेताओं के साथ उन्हें देश सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पुस्तक में ये और अन्य ऐसी ही बातें क्रम से आ गई हैं। पुस्तक के लेखक प्रबुद्ध गीतकार पं. जगन्नाथ भारद्वाज, जिन्होंने हरियाणवी लोकधारा और संस्कृति को समुन्नत करने में विशेष योगदान दिया है, उनके शिष्य प्रसिद्ध युवा गायक श्री रणबीर सिंह बड़वासनिया, चौ. रणबीर सिंह पीठ के अध्यक्ष, श्री ज्ञानसिंह और अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन के पदाधिकारी गण ने जिस शालीनता और सलीके से यह कार्य किया है, उसके लिए ये निःसंदेह बधाई के पात्र हैं।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि हरियाणा के लोगों को विशेषतः, और अन्य प्रदेशों के सुधी जन को सामान्यतः पुस्तक पसन्द आएगी।

(भूपेन्द्र सिंह हुड्डा)

डॉ आर. पी. हुड्डा
कुलपति

महर्षि दयानंद
विश्वविद्यालय, रोहतक

14 जनवरी 2010

प्रतिपाद्य

यह पुस्तक मेरे लिऐ एक अनूठा अहसास है। संघर्ष और सादगी को सुन्दर शब्दों में सजा कर लेखक ने वास्तव में अविस्मरणीय कार्य किया है। मैं अपने जीवन की किताब के कुछ मुड़े हुए पन्नों को जब भी देखता हूं, उन पर एक ही नाम विशेष रूप से उभर कर आता है, और वह नाम चौ. रणबीर सिंह जी का है। वह समय मुझे याद है जब मैने उन्हें पहली बार देखा था। गांव की एक चुनावी सभा में उन को बोलते सुना कि किसान जहां सारे देश का अन्नदाता होता है वही विचारों और योजनाओं को भी पैदा करता है।

पिता का प्यार व संरक्षण मैने कभी महसूस नहीं किया, परन्तु मेरे जीवन में जब भी कोई अवसाद आया चौ. रणबीर सिंह के अचूक आर्शीवाद ने उन अवसादों को मेरा मनोबल बना दियां। जीवन में एक मोड़ ऐसा भी आया कि जब आर्थिक तंगी का अंधकार था। ऐसे में मुझ जैसे अन्जान की एक चिट्ठी मात्र से ही चौ. रणबीर सिंह जी द्वारा भेजे गये 750 रुपये रोशनी का भण्डार बन कर आये। अगर उस समय वह सहायता न करते तो शायद जीवन के सफर में यहां तक न पहुंच पाता।

सतत संघर्षशील रहने का जज्बा तथा उपलब्धियों पर अहंकार न करने की प्रवृति उनके जीवन का सार है । मुझे आज भी उनके चेहरे की मुस्कान याद है। उन्हें देखकर कुछ होता था। वह हमेशा प्रसन्नचित्त रहते थे और संतुष्टि का भाव उनके व्यक्तित्व को सन्त बनाता था।

इस पुस्तक के लेखक पं. जगन्नाथ भारद्वाज सचमुच बधाई के पात्र हैं। उन की रचनाओं को पढ़ कर लगता है कि लेखक ने चौ. रणबीर सिंह के जीवन को करीब से देखा था। लेखन में की गई ईमानदारी साहित्य को श्रेष्ठ बनाती है, ऐसा ही पंडितजी ने किया है।

पुनः चौ रणबीर सिंह जी की महान आत्मा को नमन करता हूँ – आदर सहित।

पुस्तक को तैयार करने में जिन महानुभावों ने योगदान दिया है, उन का मैं अपनी तरफ से, और अपने विश्वविद्यालय की तरफ से धन्यवाद करता हूं। हरियाणा के जनप्रिय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी के हम विशेष आभारी है कि भारी व्यस्तताओं के बावजूद भी हमारे लिए समय निकाला और पुस्तक का आमुख लिखने की कृपा की। पुस्तक के लेखक पं. जगन्नाथ भारद्वाज, उनके शिष्य श्री रणबीर सिंह बड़वासनिया, प्रो. के. सी. यादव, श्री ज्ञान सिंह, अध्यक्ष, चौ. रणबीर सिंह पीठ, और अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी संगठन के पदाधिकारियों, जिन्होंने इस काम में महती सहयोग दिया उन का भी हम विशेष धन्यवाद करते हैं।

डॉ. आर. पी. हुड्डा

प्राक्कथन

पं. जगन्नाथ भारद्वाज

चौ. रणबीर सिंह जी के कृर्तत्व के किस्से–कहानी मैं बचपन से ही सुनने लग गया था। तब हमारा स्वतंत्रता आंदोलन खूब जोरों पर था, और चौधरी साहब उस में पूरी तरह सक्रिय थे। उस समय उन का परिचय उन के यशस्वी पिता, चौ. मातूराम जी के माध्यम से होता था, अर्थात 'आज चौ. मातूराम का छोरा जेल गया'। 'आज ... जेल तैं छुटने पर उसका 'नागरिक अभिनंदन हुआ', आदि, आदि। लोगों का ऐसा करना काफी हद तक ठीक भी था। उस समय चौ. मातूराम का व्यक्तित्व इतना विस्तृत और प्रभावशाली था कि सारे क्षेत्र में शायद ही कोई उनके बराबर हो। फरवरी 1921 में उन्होंने रोहतक में हुई गांधी जी की ऐतिहासिक सभा की अध्यक्षता की। आर्य समाज के वह चोटी के नेता थे। शिक्षा के प्रसार और सुधार के कार्यों में वह अग्रणी थे। स्वामी श्रद्धानंद जी ने उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर एक बार कहा था, ''कुछ और मातूराम मिल जाएं तो देश का कल्याण हो जाए''। पुत्र की पहचान ऐसे पिता के माध्यम से हो, यह स्वाभाविक बात थी।

चौधरी साहब के ये किस्से.कहानी सुन कर मैं बहुधा रोमांचित हो उठता था। उन के दर्शन की अभिलाषा सदैव बनी रहती थी। पर यह सौभाग्य 1952 में मिला, जबकि वह लोक सभा के लिए रोहतक से चुनाव लड़ रहे थे। वह हमारे गांव में आए। पिता जी के साथ मैं उनकी सभा में गया। उन का भाषण तो मेरे ज्यादा पल्ले नहीं पड़ा, पर अपने बचपन के नायक (हीरो) के दर्शन करके निहाल हो गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त चौधरी साहब राष्ट्र.निर्माण और जन.सेवा के कार्य में लग गए। उन की त्याग और तपस्या रंग लाई। वह संविधान सभा के सदस्य बने। संविधान के निर्माण में उन्होंने काफी महत्त्वपूर्ण योग दिया। लोक सभा, राज्य सभा, और पंजाब तथा हरियाणा की विधान सभाओं के वह सदस्य रहे

और दोनों ही जगह मंत्री भी रहे। गांव, किसान, गरीबों के हित, और सुख–समृद्धि के लिए सदनों के भीतर और बाहर खूब संघर्ष किया। राजनीति से संन्यास लेने के बाद पूर्णकालिक 'जन–सेवक' बन गए और अन्तिम क्षण तक बापू के 'दरिद्रनारायण' की सेवा करते रहे।

26 नवम्बर 2009 को हमारे लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा के एक पारिवारिक मित्र का मुझे मिलने का बुलावा आया। मैं गया। कुछ देर की औपचारिक बातचीत के बाद हम दोनों मुख्यमंत्री जी से मिलने गए और उन से डेढ़ घंटे तक अन्तरंग संवाद होता रहा। इसके फलस्वरूप चौ. रणबीर सिंह जी की जो स्मृतियां मेरे मन में थी, वे पुनः ताजा हो गईं। वहां से लौटते ही कलम उठाई और स्मृतियों को कागज पर उतार कर ही दम लिया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पाठक मेरे इस विनम्र प्रयास को पंसद करेंगे और पुस्तक में वर्णित चौ. रणबीर सिंह जी के जीवन के प्रसंगो तथा कार्यों से प्रेरणा लेकर देश–सेवा और जन–सेवा के मार्ग पर साबुतकदमी से चलने का जतन करेंगे।

मैं अपने जनप्रिय नेता और समर्पित मुख्यमंत्री जी का हृदय से आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने पुस्तक का आमुख लिख कर मेरा मान बढ़ाया। पुस्तक मुख्यतः प्रो. के.सी. यादव द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित है। मैं प्रो. यादव का भी धन्यवाद करता हूं। हरियाणा के प्रसिद्ध गायक और मेरे प्रिय शिष्य रणबीर सिंह बड़वासनिया ने भी पूरा सहयोग दिया है। उस के लिए उन का भी धन्यवाद। पुस्तक को तैयार करने में और भी बहुत से मित्रों तथा विद्वानों ने बहुमूल्य सुझाव दिए हैं, मैं उन का भी हृदय से धन्यवाद करता हूं।

पं. जगन्नाथ भारद्वाज

श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, मुख्यमंत्री, हरियाणा लेखक (पं. जगन्नाथ भारद्वाज) के साथ

प्रस्तावना

डॉ. के.सी.यादव

प्रखर राष्ट्रभक्त, स्वतंत्रता संग्राम के जुझारू सेनानी, भारत की संविधान सभा के सुधी सदस्य, उच्च कोटि के संसदविद्, और गरीब, किसान, मजदूर तथा पिछड़ों के सच्चे हितेषी, चौ. रणबीर सिंह (1914–2009) एक ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन अपने देश और अपने लोगों की भलाई में लगा दिया। अपनी प्रतिभा और कर्तृव्य–शक्ति के बल पर वह हर प्रकार के सुख एवं सुविधाएं प्राप्त कर सकते थे, परन्तु उन्होंने अपने महान उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया। उनका त्याग, तपस्या, सेवा और संघर्षयुक्त जीवन हमें, और भावी पीढ़ियों को, सदैव प्रेरणा तथा स्फुर्ति देता रहेगा।

बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद, सन् 1941 में, चौधरी साहब ने सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया। उस समय गांधी जी का व्यक्तिगत सत्याग्रह चल रहा था। चौधरी साहब ने आव देखा न ताव, उस विकट आंदोलन में कूद पड़े। सरकार भी चौकनी थी। 5 अप्रैल 1941 को उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। थोड़े दिन बाद छुटे तो फिर गिरफ्तारी दे दी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय भी यही रहा – जेल गए, बाहर आए, फिर जेल गए। किस्सा कोताह, गांधी जी के इस सत्याग्रही ने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साढ़े तीन वर्ष की कठोर कैद और दो वर्ष की नजरबंदी की सजा पाई। रोहतक, हिसार, अम्बाला, मुल्तान, फिरोजपुर, सियालकोट, लाहौर (बोर्स्टल और केन्द्रीय) जेलों में रहे। खूब यातनाएं सहीं, पर हंस–हंस कर, एक सच्चे सत्याग्रही की तरह।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। अब ? स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जो सपने देखे थे, अपने देश के और देशवासियों के कल्याण और उत्थान के लिए, उन्हें साकार करने में लग गए, उसी गम्भीरता और मन से जैसे स्वतंत्रता

आंदोलन में लगे थे। देश को संविधान चाहिए था, सो संविधान बनाने में लग गए। संविधान सभा और संविधान सभा (विधायी) के सदस्य के रूप में (1947.1949) गांव, गरीब और हासिए पर खड़े लोगों की खूब वकालत की। लोक सभा (अस्थायी) (1950.52), लोक सभा (1952.1962), राज्य सभा (1972.1978) के सदस्य रहते हुए भी यही काम किया। अच्छे काम का अच्छा नतीजा – चौधरी साहब के प्रयत्नों से गाँव और 'दरिद्रनारायण' का बहुत भला हुआ। हरियाणा राज्य बनाने में भी उनका बहुत बड़ा योगदान था।

चौधरी साहब पंजाब विधान सभा (1962.1966) और हरियाणा विधान सभा (1966.1967, 1968.1972) के सदस्य एवं (दोनों ही जगह) मंत्री रहे और जनहित के ऐसे कार्य किए कि आज तक भी लोग याद करते हैं। सिचाई के क्षेत्र में आपने विशेष योग दिया। भाखड़ा बांध के निर्माण कार्य को पूरा करवा कर भारत के प्रधानमंत्री, पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा 22 अक्टूबर 1963 को राष्ट्र को अर्पित करवाना आप की बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

1978 में राज्य सभा की सदस्यता की अवधि समाप्त होने पर आप ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया और जन सेवा के कामों में जुट गए। हरिजन सेवक संघ, पिछड़ा वर्ग संघ, भारत कृषक समाज, आदि संगठनों के माध्यम से इस क्षेत्र में आपने बड़ा महत्त्वपूर्ण काम किया। इस के साथ ही आप ने स्वतंत्रता सेनानियों की स्थिति की तरफ भी ध्यान दिया। अपने मित्र श्री शीलभद्र याजी और प्रो. एन.जी. रंगा के साथ मिलकर स्वतंत्रता सेनानियों का संगठन बनाया और श्रीमती इन्दिरा गांधी जी से स्वतंत्रता सेनानियों के लिए, 1972 में, पेंशन मंजूर कराई। 1980 में श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने इस पेंशन योजना को स्वतंत्रता सेनानी सम्मान पेंशन का नया रूप दिया। और भी बहुत से ऐसे ही काम किए। सारांशतः जीवन के अंतिम क्षणों तक वह कर्मयोगी जन सेवा में लगा रहा। 1 फरवरी 2009 को, जीवन के 94 वसन्त देखने के बाद, चौधरी साहब 'ईश्वर–इच्छा' को सिर नवाते हुए, हमेशा.हमेशा के लिए हमें छोड़कर चले गए।

प्रस्तुत पुस्तक में यह सारा विवरण पं. जगन्नाथ भारद्वाज जी ने बड़े ही दिलचस्प ढंग से हरियाणा लोकधारा की अति लोकप्रिय विधा 'किस्सा' के माध्यम से, सुन्दर राग–रागनियों में पिरो कर, प्रस्तुत किया है। जहां तक मैं समझा हूं, विद्वान लेखक की इस प्रस्तुति का केवल एक ही उद्देश्य है: चौ. रणबीर सिंह जी के 'किस्से' घर–घर, जन–जन तक पहुंच कर लोगों को उस रास्ते पर ले जाएं जिस पर चौधरी साहब स्वयं चले थे – अर्थात, देश सेवा और जन कल्याण के रास्ते पर। मुझे पूरा विश्वास है कि वह अपने उद्देश्य में सफल होंगे।

के.सी. यादव

श्रीमती सोनिया गांधी जी के साथ चौ. साहब तथा उनकी धर्मपत्नि श्रीमती हरदेई जी।

आभार

ज्ञान सिंह
अध्यक्ष, चौ. रणबीर सिंह पीठ
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

महान स्वतंत्रता सेनानी, उच्च कोटि के राष्ट्रभक्त और राष्ट्र निर्माता, प्रखर संसदविद् और जन–जन के हृदय में रचे.बसे जन–नायक चौ. रणबीर सिंह के जीवन और कर्तृत्व पर आम, साधारण जन के लिए, उन की (लोक) भाषा में एक पुस्तक तैयार करने की बात काफी समय से मन मे उठ रही थी। अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन के महासचिव श्री सत्यानंद याजी और एक दो अन्य मित्रों से विचार सांझे किए, तो बात को बल मिला और रास्ता भी सूझा। 'यह काम लोकगीतों के माध्यम से हो, सब की राय थी। यह विधा हमारे यहां बहुत सशक्त और लोकप्रिय है। और सौभाग्य से हमें इस विधा के मूर्धन्य विद्वान, पं. जगन्नाथ (ग्राम समचाना, जिला रोहतक) भी मिल गए। हमारे कुलपति प्रो. आर. पी. हुड्डा का आशीर्वाद और सहयोग तो था ही, सो कार्य काफी सहज हो गया।

पुस्तक को तैयार करने में, जैसा कि ऊपर उल्लेखित है, बहुत सारे महानुभावों ने अनेक प्रकार से हमारी सहायता की है। हम विशेष रूप से, अपने यशस्वी, मुख्यमंत्री, श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी के आभारी हैं, जिन्होंने अत्याधिक व्यस्त होने के बावजूद भी हमारे लिए समय निकाल कर पुस्तक के लिए सुन्दर और सारगर्भित आमुख लिखने की कृपा की है। इस से पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि हुई है।

हम अपने कुलपति प्रो. आर.पी. हुड्डा जी का भी धन्यवाद करते हैं कि उन्होंने कदम–कदम पर सहायता की और पुस्तक के लिए प्रतिपाद्य लिखने के लिए समय निकाला। मित्रवर प्रो. के.सी. यादव ने प्राक्कथन लिखकर विषय को अच्छी तरह से समझने के लिए पृष्ठभूमि प्रदान की है। उन का हम हृदय से

धन्यवाद करते हैं। अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन के महासचिव श्री सत्यानंद याजी और संगठन के अन्य पदाधिकारियों के भी हम बेहद शुक्रगुजार हैं जिन्होंने पुस्तक को तैयार करने में हर प्रकार की सहायता की।

पं. जगन्नाथ जी, जैसा कि ऊपर कह आए हैं, हरियाणा लोकधारा के जाने.माने विद्वान, प्रसिद्ध गीतकार हैं। उन्होंने चौ. रणबीर सिंह के जीवन को 'किस्सा' पद्धति में बुन कर प्रस्तुत किया है। हम पंडितजी के हृदय से आभारी हैं। पंडित जी के शिष्य और लोकप्रिय युवा गायक श्री रणबीर सिंह बड़वासनिया ने भी हमारी महत्ती सहायता की है। पुस्तक पर जो आडियो सी.डी. बनी है उसे बड़वासनियाजी ने ही अपनी सुरीली आवाज दी है। हम बड़वासनियाजी का भी धन्यवाद करते हैं।

आशा है हमारा यह प्रयास चौ. रणबीर सिंह जी के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेकर उन के बताए रास्ते पर चलने में पाठकों को सहायता प्रदान करेगा।

ज्ञान सिंह

किस्सा
युगपुरुष चौ. रणबीर सिंह

वार्ता

रोहतक से 12 कि.मि. की दूरी पर एक सांघी गांव बसता हैं। यह काफी पुराना गांव माना जाता है। आज से कई सौ वर्ष पहले यहां राजस्थान से चलकर हुड्डा गोत्र के लोग आ बसे थे। भाटों के अनुसार इस हुड्डा परिवार का सबसे पहला बुजुर्ग जो यहां बसा था उस का नाम "जोधा" था। जोधा के दो पुत्र हुये– भूडाराम और डालाराम। डालाराम के माईदास, माईदास के इन्दराज, इन्दराज के भिक्खू, भिक्खू के रामकरण, रामकरण के रत्नसिंह, रत्नसिंह के हरदनसिंह, और हरदनसिंह के बखतावर सिंह हुये जो बहुत योग्य एवं चतुर व्यक्ति थे।

चौ. बखतावर सिंह पहले तो गांव के नम्बरदार, फिर आला नम्बरदार और कुछ दिन बात जैलदार बन गये थे। बखतावर सिंह के एक पुत्र हुआ – मातूराम। अपने पिताजी की मृत्यु के बाद चौ. मातूराम को उनकी जगह पर जैलदार बना दिया गया था। चौ. मातूराम छोटी उम्र में ही काफी तजुर्बेकार हो गये थे। वह समय से आगे सोचते थे। इसी लिए जैलदार होते हुए भी वह राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़ गए थे। स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' से प्रभावित हो कर वह पक्के आर्य समाजी बन गए थे। हरियाणा में उन्होंने आर्य समाज को खूब फैलाया। उन के विरोधियों ने उन के जनेऊ धारण को चुनौती दी तो उन्होंने उन्हें करारा उत्तर दिया। देश के बड़े–बड़े नेताओं से उनके गहरे सम्बन्ध थे।

ग्राम चौपाल : सांघी

जन्म–स्थल : सामने वाले कमरे में चौ. रणबीर सिंह ने 26 नवम्बर 1914 को जन्म लिया

[1]

तर्ज– लाहौर जिले में एक छोटा सा .....

टेक : हरियाणें मैं रोहतक धोरै एक सांघी गाम निराला।
इसी गांव नै कहा करैं से धरती का बिचाला।।

(1) पहले से ही प्रतिष्ठा है इस सांघी गाम की।
सारे ईज्जत होया करै से आछे काम की।
आज तक भी कीर्ती है उनके नाम की।
ये नगरी है महापुरुष चौ. मातूराम की।
पड़ता रहा जीवन भर जिनका संघर्षों से पाला।।

(2) चौ. मातूराम का बचपन से कुशल व्यवहार था।
मातृभूमि का उनके दिल मै सच्चा प्यार था।
घर मै ठीक गुजारा बढ़िया कारोबार था।
सारे हल्के का सम्मानित वोह जैलदार था।
था हरियाणे में पहला जनेऊ धारण करणे आला।।

(3) बचपन में स्वामी दयानन्द का सत्यार्थप्रकाश पढ़ा था।
उस दिन पाछै आर्य समाज का पक्का रंग चढ़ा था।
कांटा खोबा खांखली चाहे राह में कोये खड़ा था।
कदे पाछै मुड़ कै देख्या कोन्या आगै कदम बढ़ा था।
राष्ट्रिय आन्दोलन से जुड़गे जिस दिन होश संभाला।।

(4) एक रोज मुख्य अध्यापक श्री बलदेव सिंह जी आगे।
वै भी आर्य समाजी थे दोनूँ बतलावण लागे।
थोड़ी देर के बाद खुशी के बादल घर में छागे।
इसे पूत्र नै जन्म लिया सब भाग कुटूम्ब के जागे।
जगन्नाथ फेर इसी पूत नै गांव का नाम उजाला।।

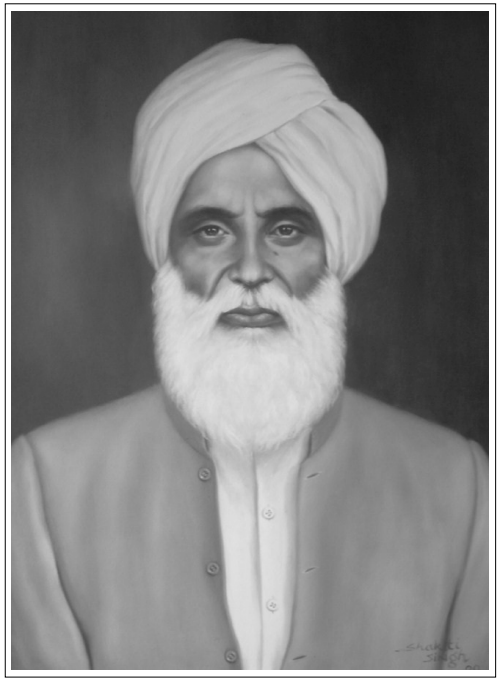

चौधरी साहब के पिता, चौधरी मातूराम जी

[2]

वार्ता

26 नवम्बर सन् 1914 को हेडमास्टर चौ. बलदेव सिंह (हुमायूँपुर) चौ. मातूराम के पास जाट स्कूल के बारे में सलाह करने आये। दोपहर होने को थी। श्रीमती मामकौर (चौ. मातूराम की धर्मपत्नी) ने भोजन बनाया तथा चौ. मातूराम व हैडमास्टर साहब बलदेव सिंह, दोनों को खिलाया। दोनों भोजनोपरान्त बैठ कर प्लान बनाने लगे, इतने में घर के अन्दर से नवजात शिशु के रोने की आवाज आई। हैडमास्टर साहब कहने लगे, "किसी नवजात शिशु की आवाज आई है।" चौ. मातूराम ने कहा, "यह आवाज तो हमारे ही शिशु की होगी।" श्रीमती मामकौर काम निपटाकर कमरे के अन्दर गई तो ना चीख, ना चिल्लाहट, ना असहनीय पीड़ा, ना जानलेवा वेदना और शिशु दुनियां में आ गया। **कौन था यह शिशु ? यह था भावी स्वतन्त्रता सेनानी, चौ. रणबीर सिंह।**

जब घर में बेटे के जन्म होने पर खुशी की प्रतीक थाली बजाई गई तो हैडमास्टर बलदेव सिंह ने उसी समय भविष्यवाणी कर दी कि "यह बालक बड़ा होकर पूरे खानदान का कुलदीपक बनेगा।" रणबीर सिंह के सहज जन्म पर कवि ने क्या कल्पना की, भला –

टेक : जितणी आसानी से जग में रणबीर सिंह आया।
उतणी ही आसानी से ये सारा जन्म बिताया।।

(1) सन् 1914 महिना आया नवम्बर का।
माता मामकोर ने सारा काम करा घर का।
काम खत्म कर गई कमरे में नाम लिया हर का।

चौ. रणबीर सिंह की माताजी श्रीमती मामकौर

ना चीख ना पीड़ा ना कोये वेदना हुआ आणा पुत्र का।
ना दाई, ना वैद्य, डाक्टर कोये नहीं बुलाया।।

(2) छः साल की उमर हुई जब आया पढ़ण का ख्याल।
अपणे गांव में करी पढ़ाई पूरे चार साल।
फिर आगे की सोचण लाग्या इब तूँ रोहतक चाल।
भैंसवाल नै हो लिया कर दी रोहतक की टाल।
भगत फूलसिंह के गुरुकुल मै अपणां नाम लिखाया।।

(3) वैसी ए जगह पहूँच गया वो जैसे थे संस्कार।
पढ़णे में कमजोर नहीं था बहोत घणा होशियार।
फेर दातों की पीड़ा नै इसा कर दिया लाचार।
बेमारी के कारण फेर गुरुकुल में जाण नहीं पाया।।

(4) वैश्य स्कूल रोहतक से करी दसवीं परीक्षा पास।
उतणे नम्बर ना आये थी जितणी दिल में आश।
सब अध्यापक करैं बड़ाई सब कह रहे शाबास।
जगन्नाथ दिल खिला नहीं वो रहणे लगा उदास।
फेर घरक्याँ नै पास बिठा कै सहज–सहज समझाया।।

[3]

वार्ता

1929 में जब भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह भेष बदल कर पुलिस से बचने के लिए चौ. मातूराम के घर आये तो रणबीर सिंह केवल 15 साल के थे। इस अजनबी के बारे में अपने पिता से वह कुछ इस तरह के सवाल करते हैं –

The Tribune

Lahore, February 19, 1921

MAHATMA GANDHI'S TOUR,
MEETINGS AT KALANAUR AND ROHTAK

Rohtak, Feb. 17.

Mahatma Gandhi and party left Bhiwani yesterday morning by motor and on their way stoped for an hour to address a meeting at Kalanaur. ....

The party arrived at Rohtak at about 12 noon. The first function was a visit to the Jat School, which had been lately nationalized. A vast multitude had assembled there. Short speeches were delivered and the foundation stone of the Vaishya High School was laid and a meeting was held. Then Mahatmajee went to the ladies' meeting and addressed them.

The Party then went to the Conference. The same resolutions which were passed at Bhiwani were passed unanimously; and the meeting was addressed by all the leaders. More than 25 thousand people attended. Chaudhary Matu Ram presided. The whole audience received with applause the announcement of L. Sham Lal, the leading local Vakil, that he suspended his practice for one year from the 1st March. The Headmaster, Gaur High School declared, that he had resolved to give up his present post and no more employ himself in any government or aided school. Great enthusiasm prevailed throughout the day; and the Haryana Rural Conference, which began its sitting at Bhiwani, was brought to a close at Rohtak. Amidst shouts of *Bandemataram* and *Allah-o-Akbar*, Mahatmaji, Lalaji and Maulanaji left for Lahore is the evening.

'ट्रिब्यून' (लाहौर) की 'खबर' जिसमें गांधीजी की सभा की चौ. मातूराम द्वारा प्रधानता करने का उल्लेख है।

तर्ज – कौण कड़े तै ब्याह के लाया .....

पुत्र : यो कौंण कड़े तैं आ रहा सै के म्हारी इसकी अस्नाई सै ?
पिता : यो आजादी का वीर दिवाना इस नातै म्हारा भाई सै।।
पुत्र : इसा आदमी तै इस घर में मनै देख्या पहली बार।
पिता : तूँ बालक था तनै जाण नहीं सै म्हारा पुराणा प्यार।
पुत्र : यो क्यूकर म्हारा भाई होग्या हम जाट अर यो सरदार ?
पिता : जात पात यहाँ कुछ ना बेटा हम सारे एकसार।
पुत्र : गलत आदमी घर में रखणा या भी एक बुराई सै।
पिता : यो गलत आदमी कोन्या बेटा सच्चावीर सिपाही सै।।
पुत्र : अगर किसै नै जाण पाटगी तै हम भी मारे जावैंगे।
पिता : जब तक डरते रहे मौत से, नहीं आजादी पावैंगे।
पुत्र : इन अंग्रेजाँ की फौज कै आगै हम कुछ ना कर पावैंगे।
पिता : फौज भी म्हारी और देश भी म्हारा ये तै खड़े लखावैंगे।
पुत्र : मैं समझ ना पाया या आजादी की किसी लड़ाई सै ?
पिता : इन अंग्रेजाँ नै म्हारे देश में लूट मचाई सै।।
पुत्र : इसनै घर तैं बाहर करो मनै डर लागै सै भारी।
पिता : अपणी गर्दन कटवालूँ पर तोडूं कोन्या यारी।
पुत्र : इस नै घर में राखण की भी सै कुणसी लाचारी ?
पिता : इसका साथ नहीं छोडूं चाहे ज्यान चली जा म्हारी।
पुत्र : कौणं से सुख की खातिर या ज्यान की बाजी लाई सै ?
पिता : या गुलामी की जिन्दगानी बेटा देख घणी दुखदाई सै।
पुत्र : इसकी गेल्याँ रह कै नै तूँ कुणसा फायदा ठावैगा ?
पिता : जै मर भी गया तै नाम अमर हो तेरा बाबू शहीद कहलावैगा।
पुत्र : यो देश कहैगा चोर लुटेरा तेरै सौ–सौ तोहमन्द लावैगा।

पिता : एक दिन होगी जीत हमारी बख्त इस्सा भी आवैगा।
पुत्र : जगन्नाथ तनै आजादी की क्यूँ इतणी लगन लगाई सै ?
पिता : देश भगती से बढ़ कै जग में ना कोये और कमाई सै।

[4]

वार्ता

दसवीं परीक्षा पास करने के बाद जीवन में एक नया मोड़ आया। उन दिनों गांधी जी ने आन्दोलन छेड़ रखा था। गांधी जी से प्रभावित हो कर चौ. रणबीर सिंह भी आन्दोलनों में कुछ भाग लेने लग गए। 1929 में रणबीर सिंह ने केवल 15 साल की उम्र में पिता की आज्ञा से भाई बलबीर सिंह व भाभी के साथ लाहौर में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में भाग लिया। लाहौर से लौट कर रोहतक में 'स्वराज दिवस' मनाया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में लाला श्यामलाल के साथ नमक भी बनाया। यही नहीं, वह अपने पिता जी के साथ चुनावों में उनकी मदद करने भी गए। एक दिन घरवालों ने कहा, बेटा! तेरी उमर अभी पढ़णे की है। तूँ आगे पढ़ाई कर। वह नहीं माने और 7 अप्रैल, 1934 को गांधी जी ने जब आन्दोलन बन्द कर दिया, तब ही दोबारा किताब उठाई। कुछ दिन के बाद रणबीर सिंह दिल्ली चला गया और वहाँ के मशहूर रामजस कालेज मै दाखिला ले लिया।

टेक : समझदार था समझ गया वो घरक्यां के समझाये पाछै। दिल का दुःख सब दूर हुआ करै आपस में बतलाये पाछै।।

(1) दिल का फूल दोबारा खिलग्या,
दिल्ली सहज दाखिला मिलग्या,
एक दम जीवन कती बदलग्या, रामजस कॉलेज में जाये पाछै।।

(2) बुरा किसै का चाह्या कोन्या,
संकट में घबराया कोन्या,

उल्टा कदे हटाया कोन्या, आगै कदम बढ़ाये पाछै।।

(3) दिया जब बी.ए. का इम्तिहान,
होग्या देखण लायक जवान,
सब होगे हैरान, परीक्षा मै आछे नम्बर आये पाछै।।

(4) जगन्नाथ फेर बख्त विचारा,
देश भगती का चोला धारा,
एक दिन होगा राज हमारा, ये गोरे लोग भगाये पाछै।।

[5]

वार्ता

1937 में बी.ए. की परीक्षा पास करने के पश्चात् चौ. रणबीर सिंह जी सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिये – नौकरी या खेती.बाड़ी या व्यापार ? घर वालों ने उनके रिश्ते की बात पहले ही तय की हुई थी। रणबीर सिंह अपने रोजगार के विषय मै सोच रहा था और घर वाले उसके विवाह की तैयारी कर रहे थे। रिश्ते के समय चौ. छोटूराम गांव आए। चौ. मातूराम ने कहा, "जहाँ आपकी बेटी ब्याही है वहीं मेरे बेटे का भी रिश्ता हुआ है।" चौ. छोटूराम से पूछा, "कैसे आदमी हैं, वो?" चौ. छोटूराम ने कहा, "आदमी तो अच्छे हैं लेकिन रूसैल हैं।" सारे हालात पर कवि ने क्या कल्पना की भला–

तर्ज – नगरी–नगरी द्वारे–द्वारे ३७

टेक: इब आगै के करणा चाहिये या चिन्ता भारी होगी।
बी.ए. पास करे पाछे फेर ब्याह की त्यारी होगी।।

(1) कदे सुणा हो जिले जीन्द मै एक डूमरखाँ गाम।
हरद्वारी की लाडली हरदेई जिस का नाम।
रीत रिवाज तमाम प्रेम से पूरी सारी होगी।।

(2) ब्याह होग्या फेर सोचण लाग्या इब करूँ कौणसी कार।
खेती करूँ या करूँ नौकरी या शुरू करूँ व्यापार।
रोजगार बिना या जिन्दगी पूरी क्यूकर होगी।।

(3) जो देशभक्ति का जज्बा था वो मन मै गया जाग।
ज्यान न्यौछावर कर दूंगा पर लागण दयूं न दाग।
इसी लगन गई लाग या अपणी ए जिन्दगी खारी होगी।।

(4) कहै जगन्नाथ न्यूँ भी ना सोची तेरी पत्नी कष्ट सहैगी।
किस के आगै जाकै अपणे मन की बात कहैगी।
तेरा पति जेल में तूँ घरँ रहैगी या के बात बिचारी होगी।।

[6]

वार्ता

1941 की एक सुबह रणबीर सिंह आजादी के संघर्ष में उतरने का दृढ़ निश्चय करके अपने पिताजी चौ. मातूराम के पास जाकर सत्याग्रह में उतरने व कांग्रेस का सक्रिय सदस्य बनने की अनुमति मांगने लगे। बेटे की बात सुन कर पिता ने उन्हें एक ही शिक्षा दी कि जीवन में इस राह को कभी मत छोड़ना। रणबीर सिंह पिता को अपने मन की बात कुछ इस तरह बताते हैं–

चौ. साहब अपनी धर्मपत्नी श्रीमती हरदेई जी के साथ

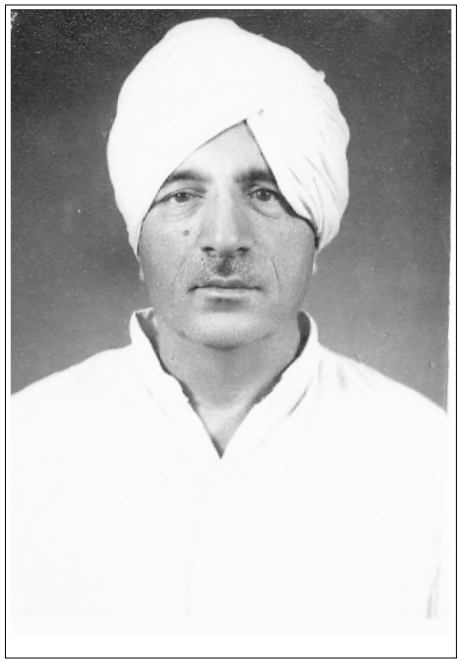

चौ. रणबीर सिंह युवा सत्याग्रही के रूप में

तर्ज : बांदी होके ठाडू धमकावण का .....

टेक: सत्याग्रह करण की मन मै आई।
हुआ घोर अन्धेरा कुछ देता नहीं दिखाई।।

(1) बस केवल चाहिये आशीर्वाद तुम्हारा।
मनै देश के अर्पण कर दिया जीवन सारा।
मैं देश की सेवा करण जगत मै आरहा।
वो जलियांवले का ना देखा गया नजारा।
उड़ै जितणे मरगे वै थे सब मेरे ऐ भाई।

(2) सुण बेटे की बात पिता हर्षाया।
रहा गया ना झट छाती कै लाया।
तनै अपणी समझ से जो भी कदम उठाया।
इस हुड्डा खानदान का मान बढ़ाया।
इस तैं बड़ी यहाँ ना कोये और कमाई।।

(3) फेर सोच समझ कै गया ब्याही के पास।
बड़े प्रेम से करण लगा अरदास।
इब आगै मत करिये मेरी आस।
होया करैगा मेरा जेल में वास।
खुद पत्नी नै भी दूणी धीर बन्धाई।।

(4) फेर श्रीराम शर्मा धोरै रोहतक आया।
दिया परिचय और सारा हाल बताया।
शर्मा जी भी फूल्या नहीं समाया।
कांग्रेस का सक्रिय सदस्य बणाया।
फेर जगन्नाथ कदे छोड़ी ना या राही।।

[7]

वार्ता

कांग्रेस की सक्रिय सदस्यता ग्रहण करने के पश्चात् चौ. रणबीर सिंह देश के हालात के बारे में सोचते हैं और आजादी के आन्दोलन में कूद पड़ते हैं–

तर्ज : समझालूंगी जब आवैगा मेरे पास .....

टेक : वो करणे लगा विचार, रणबीर सिंह तूँ होले घर तैं बाहर।।

(1) किसे पागल समझें म्हारी चीज पै ओरां का धिगंताणां के।
ऊखल मैं सिर दे कै नै फेर मुसल तैं घबराणां के।
नाचण लागी फेर सभा में घूंघट तैं शरमाणा के।
वो एकदम हुया फरार, धूल भरी आखां में पुलिस खड़ी लाचार।

(2) आगै–आगै रणबीर सिंह और पाछै–पाछे पुलिस फिरै।
इसा आदमी के खावै और किस तरियाँ विश्राम करै।
जंगल मै फल फूल और पत्ते खा पी के नै पेट भरै,
था बहोत घणा होशियार, ध्याया कोन्या गई पुलिस भी हार।।

वार्ता

सरकार ने रणबीर सिंह की गिरफ्तारी वारंट जारी किये हुये थे। पुलिस उनकी तलाश में घूम रही थी, परन्तु वह हाथ नहीं आये। पुलिस ने उन के साथियों के बच्चों को पकड़ कर पुलिस वालों ने थाने में बिठा लिया और उन से पूछताछ करने लगे। जब रणबीर सिंह को पता चला तो वह स्वयं ही थाने में पेश हो जाते हैं और क्या कहने लगे?

(3) खुद थाणे में जाकै कहदी ऐसा मत व्यवहार करो।
क्यूँ बच्चे पकड़ बठाये तुमने इनको यहाँ से बाहर करो।
रणबीर सिंह सै नाम मेरा तुम मुझको ही गिरफ्तार करो।
वा पुलिस खड़ी थी तैयार, घर बैठां नै मिलग्या आप शिकार।।

(4) अदालत में पेश करा जब करड़ी सजा सुणाई थी।
एक साल की कैद सुणा लाहौर की जेल दिखाई थी।
उडै सत्याग्रह के बन्दियों से दोस्ती खूब बढ़ाई थी।
वै बणगे पक्के यार, जगन्नाथ कुछ पाछले संस्कार।।

[8]

वार्ता

जेल से छुटने के बाद, कई जगह हिन्दू–मुसलमानों के दंगे हो गए। गांधी जी ने कुछ समय के लिए सत्याग्रह आन्दोलन बंद कर के कौमी एकता के लिए सब को काम करने को कहा। उनके आह्वान पर रणबीर सिंह शान्ति कायम करने के लिए लोगों के बीच पहुंच गए। चौ. रणबीर सिंह, मूलचन्द जैन, दिलावर सिंह तथा मा. नान्हूराम साईकिलों पर ही जलसों में पहूँच जाते, साथ में किसी गवैये को ले लेते थे। जब गांव की चौपाल में जाते तो प्रचार होता। पहले तो गवैया लोगों को गा कर समझाता। उसके बाद चौ. रणबीर सिंह व मूलचन्द जैन आदि भाषण करते। कैसे हालात बने भला–

टेक : मार काट की आग लगी इब बैठणां किस काम का।
आग कै म्हां कूदग्या छोरा मातूराम का।।

(1) जनता हाथ जोड़ समझाई,
कुछ तौ राखे गात समाई,
भाज दौड़ कै आग बुझाई, करया दौरा गाम गाम का।।

(2) आग इसी जो बुझ नहीं पावै,
क्यूकर अपणां गात बचावै,
क्यूकर भी ना काबू आवै, ढ़ंग बदला देश तमाम का।।

(3) कुछ लोगों नै रोकणां चाह्या,
नहीं रूका और ना घबराया,
अगर किसै कै काम ना आया, तै के ऊठै इस चाम का।।

(4) कहै आंख्याँ देखी भारद्वाज,
ज्यूकर या बात हुई हो आज,
खूब गया डंका बाज, चौधरी रणबीर सिंह के नाम का।।

[9]

वार्ता

थोड़े दिन बाद चौ. रणबीर सिंह फिर जेल की सलाखों के पीछे चले गए। जेल में काफी खटटे–मीठे अनुभव चखे। सरकार के आदेशानुसार चौधरी साहब 24 दिसम्बर 1941 को रिहा हो गये। इस बार भी एक साल की सजा हुई थी परन्तु एक साल से पहले ही वह बाहर आ गए।

चौ. मातूराम जी का स्वास्थ्य इन दिनों काफी खराब चल रहा था। जुलाई 1942 मै उनकी हालत बिलकुल नाजुक हो गई। खूब इलाज कराया, परन्तु होंणी को कौन टाल सकता है। 14 जुलाई 1942 को वह संसार छोड़ कर चले गये।

तर्ज : केला तोड़ कै अर्थी तुरंत बणाली .....

टेक: ना चला जोर एक ओर मुसीबत आगी।
बिना खोट या चोट कॉलजै मै लागी।।

(1) सन् उन्नीस सौ बियालिस चौदह जुलाई।
चौ. मातूराम गये पकड़ स्वर्ग की राही।
सब खड़े देखते रहगे ना पार बसाई।
मृत्यु आगै ना करती कोए काम दवाई।
या चोट नहीं जिन्दगी भर भूली जागी।।

(2) इब सब तरियाँ तैं जी नै खाड़ा होग्या।
सारे काम का कती कबाड़ा होग्या।
किसै जन्म में कोये कर्त्तव्य माड़ा होग्या।
बाप बिना आज कती उघाड़ा होग्या।
या आपत्ति एक मार्ग नया दिखागी।।

(3) फेर सहज–सहज कुछ गात होश में आया।
बैठ अकेला अपणा दिल समझाया।
सदा की खातिर यहाँ कोये ना आया।
सोच समझ कै पहला कदम उठाया।
मोह माया और धन दौलत सब त्यागी।।

(4) एक सराहनीय बहोत बड़ा किया काम।
धरती सब करवाई भाई के नाम।
आगै सेधण के करे झंझट दूर तमाम।
इब सत्याग्रह में चाल किसा आराम।
जगन्नाथ या मौत तै सब नै खागी।।

[10]

वार्ता

गांधी जी का सत्याग्रह चल ही रहा था– अपने तरीके से। चौ. रणबीर सिंह कहाँ रूकणे वाले था। जब तक देश आजाद नहीं हो जाता तब चैन कहाँ? पिता की मौत का सदमा भुलाते हुए एक महीने के भीतर ही दोबारा संघर्ष में कूद पड़ते हैं। कैसे, बताया कवि ने भला–

तर्ज : गरीबों की सुनो यो तुम्हारी सुनैगा .....

टेक : अपणे जीवन के बारे में कदे बिचारा कोन्या।
देश आजाद कराये बिन कोये जीणां म्हारा कोन्या।।

(1) अंग्रेजां के जुल्मां की कहाणी सुणै था हर जुबान तैं।
जो भी कोए जिक्र करै वो सुणता बड़े ध्यान तैं।
सिकुड़–सिकुड़ कै जीणा कुछ ना, जीवांगे हम शान तैं।
मरणा ज्यादा अच्छा सै, हर रोज के अपमान तैं।
इतणी कहै कै चल दिया घर तैं, इब रणबीर थारा कोन्या।।

(2) घर परिवार छोड़ कै हो लिया गांधी जी के साथ।
गांधी जी के चरणों कै म्हां सौपे दिया था गात।
सब भारतवासी अपणे समझे ना कोये जात जमात।
निर्भय हो कै अपणे काम के लगे रहे दिन रात।
किसी क्षेत्र में कदे भी रणबीर सिंह हारा कोन्या।।

(3) सच बूझो तै यो जीवन अपणा मैं समझूं सूं बेकार।
बाणी भी बंद कर राख्यी, ना बोलण का अधिकार।
हम कितने दिन तक और रहेंगे इनके ताबेदार।
मां के गर्भ से जन्म मनुष्य का मिलता है एक बार।
जो काम करण की धार लेई फेर कुछ भी भार्या कोन्या।।

(4) इब आजादी की खातिर जान की बाजी लाणी सै।
देश कै ऊपर मरज्यांगा इस में के हाणी सै।
या काया और धन माया तै आणी जाणी सै।
स्वराज दिलावण की इब मन मै पक्की ठाणी सै।
शायद जगन्नाथ यो मनुष्य जन्म कदे मिलै दोबारा कोन्या।।

[11]

वार्ता

8 अगस्त 1942 को गांधी जी ने बम्बई में भारत छोड़ो आन्दोलन की घोषणा कर दी। अंग्रेज डर गए और जबरदस्त दमन शुरू हो गया। रातों रात गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया। और भी नेता गिरफ्तार हो गए। लोगों ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और चारों तरफ हिंसा फैल गई। रेलवे लाईनें, डाक घर और टेलीफोन की तारें काट दिए गए। रणबीर सिंह भी कहां पीछे रहने वाले थे। उन्होंने भी आसौदा की हवाई पट्टी उड़ा दी। अंग्रेजों ने उन्हें खतरनाक अपराधी घोषित करते हुए देखते ही गोली मारने के आदेश दे दिए। कैसे हालात बने भला–

तर्ज : मत मरवाओ ब्याही नार नै .....

टेक: हो लिया गांधी जी के साथ में, दिल सब तरियां समझाया।।

(1) खतरनाक घोषित कर राख्या वो घर से फरार था।
टोहें तै भी पावै कोन्या अंग्रेज भी लाचार था।
आजादी का जज्बा उसकी बुद्धि पै सवार था।
हालत बहुत बुरी होरी थी, हसनगढ़ – खरखौदे की।
भाझ जुल्म का गला पकड़ लिया, लिहाज करी ना ओहदे की।
एक झटके मैं तार–तार करी हवाई पट्टी आसौदे की।
यो काम कर्या एक शात मै उड़ै सबका भ्रम मिटाया।।

(2) देखते ही गोली मारो ये आदेश था सरकार का।
मत करियो विश्वास यो ना आदमी ऐतबार का।
पुलिस का भी पाछै–पाछै पड़ा रहै था मार का।
सिलसिला ये चलता रहा कदे भीतर कदे बाहर।
फिरोजपुर अम्बाला कदे रोहतक और कदे हिसार।
स्यालकोट, मुलतान मै और लाहौर जेल गया दो बार।
रहा जितणे दिन हवालात में, हँस–हँस कै बख्त बिताया।।

(3) जितने दिन तक ये जिंदगानी जेल मैं बिताई थी।
ओच्छी मंदी बात कदे मन पै भी ना आई थी।
पहले से जो बंदी थे उनसे दोस्ती बणाई थी।
उनक दोस्ती नै आगै मार्ग नया दिखाया था।
सब बातां ने जाणै था, पहल्यां ए पढ़या–पढ़ाया था।
सारे बंदी रिहा करे जब सबतैं पाच्छै आया था।
रणबीर सिंह की बात मैं फर्क कदे ना पाया।।

(4) जगन्नाथ बात ऐसी, ना हवा मैं उडाई जा।
छोटे–छोटे बालकां नै प्यार तैं बताई जा।
पता नहीं कौण बालक पकड़ याहे राही जा।
छुपी हुई प्रतिभा इन बालकां मैं पाया करै।
देशभक्ति की लहर दिल मैं जाग भी तै जाया करै।
महापुरुषों की जीवनी भी रास्ता दिखाया करै।
सब किस्मत अपणे हाथ मैं, बिन ज्ञान मनुष्य भरमाया।।

[12]

वार्ता

इसके बाद चौ. रणबीर सिंह को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया और एक साल की सजा सुनाई गई। पहले उन्हें रोहतक जेल में रखा गया। फिर दूसरी जेलों में रहे। जेल से रिहा होने के बाद वह 24 जुलाई 1944 अपने ससुराल होते हुए घर आए। उन दिनों उन की दाढ़ी और सिर के बाल बढ़े हुए थे। पूरे सरदार लगते थे। जब ससुराल पहुंचे तो बाग में मौजूद उनके साले देवराज भी उन्हें नहीं पहचान सके। कैसे बात बनी भला–

तर्ज : मेरे आए ना भरतार, ला दी वार .....

टेक : था दिल का दरवेश, बदला भेष,
इब यो देश आजाद कराणां सै।।
इब मनै ध्यान हरी में ला लिया रै।

(1) अपणा दिल पापी समझा लिया रै।
चाहे हो जाऊँ बदनाम, मैं सरे आम,
कुछ करकै काम दिखाणा सै।।

(2) इब मुश्किल दिल में धीर धरी जा।
इन की गुलामी नहीं करी जा।
इन के कोन्या शर्म, लिहाज, धोखेबाज,
इब स्वराज देश में ल्याणां सै।।

(3) जब किसै तैं मन की बात बतावता।
कोये श्याणा माणस न्यूँ समझावता।
अपणे यारे प्यारे जोड़, घर नै छोड़,
डंका चारूँ ओड़ बजाणा सै।।

(4) जगन्नाथ गात का ख्याल नहीं सै।
किसै बात का भी कोये मलाल नहीं सै।
लई मन मै पक्की धार, ना मानूँ हार,
जणैं कितणी बार, जेल मै जाणां सै।

[13]

वार्ता

अंग्रेजों ने चौ. रणबीर सिंह को दोबारा गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। अब मुलतान जेल में और भी हरियाणे के कई कद्दावर नेता आ गये थे। चौ. रणबीर सिंह की सब से जान–पहचान हुई। मुलतान जेल में बेहद गर्मी थी। मुलतान धूल–आन्धी के लिए मशहूर था। दूसरा, जेलर लोगों से भद्दे ढ़ंग से पेश आता था। जेल का माहौल काफी खराब हो गया था। एक कैदी की मौत भी हो गई थी। उस का रणबीर सिंह ने काफी विरोध किया। रणबीर सिंह जब जेल के अस्पताल में उस कैदी को देखने गये तो जेलर ने रणबीर सिंह से पूछा, "क्या तुम बिमार हो?" रणबीर सिंह ने कहा, ''नहीं''! उसने कहा, ''फिर अस्पताल किस लिये गये थे। तुम गांधीवादी मालूम होते हो।'' रणबीर सिंह ने हाँ कर दी। उन्होंने कहा, "गान्धी जी ने तो सलाह दी है कि राजनीतिक बन्दियों को जेल के कानून का पालन कराना चाहिये।" रणबीर सिंह ने कहा, ''बात सही है परन्तु इसके साथ–साथ गांधी जी का यह भी कहना है कि जिस जुल्म को बर्दाश्त ना कर सको तो उस जुल्म के मुकाबले में लड़ने के लिये खड़े हो जाओ।'' रणबीर सिंह ने उस जेलर को कैसे समझाया।

तर्ज : तेरे फूलों से भी प्यार तेरे कांटे से .....

टेक: ये है आर्यों का देश, उपकारियों का देश,
सही पतिव्रता नारियों का देश, फुलवारियों का देश।।

(1) सदा से ही कायम है यहाँ धर्म कर्म।
दया का है भाव दिल में नैनाँ मैं शर्म।
ब्रह्मचार्यों का देश, आचार्यों का देश,
सही पतिव्रता नारियों का देश, फुलवारियों का देश।।

(2) यहाँ शीतल जल और शुद्ध हवा।

जे सब रोगों की हो आप दवा।
ना जवारियों का देश, ना मदारियों का देश,
सही पतिव्रता नारियों का देश, फुलवारियों का देश।।

(3) इसा देश ना कौये और जमीं पर।
यहाँ हवन कीर्तिन सन्ध्या होती घर घर,
छत्रधारियों का देश, ना भिखारियों का देश,
सही पतिव्रता नारियों का देश, फुलवारियों का देश।।

(4) इब जगन्नाथ किसा डाल रहे डाका।
हम नै है तैयार किया इस देश का खाका।
देशभगतों का देश, ना बेमारियों का देश,
सही पतिव्रता नारियों का देश, फुलवारियों का देश।।

[14]

वार्ता

सन् 1944 में रणबीर सिंह रोहतक हवालात में बन्द थे। रात को एक दम ऐसी प्यास लगी कि रूका नहीं गया। उन्होंने बाहर खड़े सिपाही से पानी मांगा। सिपाही ने इन्कार कर दिया तो दोनों के बीच क्या सवाल–जवाब होते हैं–

तर्ज : तलै खड़या क्यू रूक्के मारै। .....

रणबीर सिंह: पाणी प्यादेगा तै तेरे पै के पहाड़ टूट कै पड़ ज्यागा।
सन्तरी : पाणी तै मैं प्यादूँगा पर तेरा धर्म बिगड़ ज्यागा।

(1) धर्म अलग–अलग ना होते तेरै किसनै शिक्षा लाई।
चारों न्यारे–न्यारे हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई।
म्हारा थारा धर्म एक हम सारे भाई–भाई।

सच बूझै तै तेरी बात ना मेरी समझ मैं आई।
सारी बात बतादी तै आड़ै रास्सा छिड़ ज्यागा।
मन्नै तै मरवा देगा खुद बाहर लिकड़ ज्यागा।।

(2) पाणी में सब का साझा हो तूँ अपणा भ्रम मिटादे।
यो भी बेहू होज्या जब कोये शूद्र हाथ लगादे
समाज नै बणा राखे कुछ उल्टे सीधे कायदे।
क्यूकर पाणी प्याऊँ तनै इब तूहें आप बतादे।
यो पाणी सै कोये सर्प नहीं जो हाथ लावते लड़ ज्यागा।
तेरा कुछना बिगड़ैगा पर म्हारै ताला भिड़ ज्यागा।।

(3) मत उल्टी सीधी बात करै तूँ ठीक अकल करले।
समय बड़ा बलवान यो सब ने अपणै बल करले
प्यासे नै पाणी प्याकै अपणा जन्म सफल करले।
दो घन्टे की बात ओर सै दिल नै करड़ा करले।
दो घन्टे मैं तै यो प्राण पखेरु आपै ऐ उड़ ज्यागा।
रोज मरैं से इसे–इसे के यो शहर उजड़ ज्यागा।।

(4) तेरै नहीं आचँ आवण दूँ कती घबराइये मतना।
मैं बालक ना सूँ मेरै ज्यादा शिक्षा लाइये मतना।
मित्र जैसा भाव राख चाहे पाणी प्याइये मतना।
ले पाणी पी ले पर एक शर्त सै मनै मरवाइये मतना।
जगन्नाथ तेरी मृत्यु कै आगै आ कै अड़ ज्यागा।
जाण पाटगी तै मेरा भी कती माजरा झड़ ज्यागा।

[15]

वार्ता

छः माह पूरे होने पर चौ. रणबीर सिंह को जेल से रिहा कर दिया गया। पर साथ ही गांव की नजरबंदी और रोहतक थाणे मै सप्ताह मै एक बार हाजरी की पाबन्दी लगा दी गई। परन्तु रणबीर सिंह ने पाबन्दी की कोई परवाह नहीं की। वह गांव छोड़ कर अपने राजनीतिक साथियों और रिश्तेदारों से मिलने चले गये। इस दौरान एक पत्रकार से मिले और अखबार में 'अपनी आवाज' मै अपना लेख प्रस्तुत किया, जो अंग्रेजों के विरोध में था। इन्हीं दिनों 1946 के चुनाव की घोषणा हो गई। समय पर चुनाव हुये। उन्होंने कांग्रेसी प्रत्याशी की खूब मदद की। फलतः यहाँ से कांग्रेस टिकट पर सभी प्रत्याशी सफल रहे। कांग्रेस ने युनियनिस्ट पार्टी से मिलकर संयुक्त सरकार बनाई। हरियाणा से कांग्रेसी नेता चौ. लहरी सिंह मन्त्रीमंडल में शामिल हुये। उन दिनों के गर्म और उत्तेजित वातावरण में न तो सरकार, और न ही विधान सभा कोई लाभकारी कार्य कर सकी। मुस्लिम लींग के नुमाइन्दों की जबान पर पाकिस्तान की रट लगी हुई थी। असैम्बली से बाहर का जन जीवन और भी ज्यादा बुरी अवस्था में था। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे थे। सरकार ने सेना का भी प्रबन्ध किया, परन्तु स्थिति काबू में नहीं आई। जगह–जगह हिन्दू और मुसलमानों के झगड़े हुये जिनमें हजारों लोग मारे गये। ऐसे वातावरण में 15 अगस्त सन् 1947 को भारत आजाद हो गया। चौ.

रणबीर सिंह सरीखे छोटे–बड़े लाखों लोगों की कुर्बानी आखिर रंग लाई। स्वराज के सुनहरे व मधुर स्वर कानों में पड़े। रोम–रोम पुलकित हो उठा। लेकिन इसी दौरान देश के बंटवारे को लेकर हिन्दू–मुस्लिम दंगे भी शुरू हो गए इस मौके पर चौ. रणबीर सिंह इस बंटवारे की लड़ाई को लेकर साथियों को क्या कहने लगे भला –

तर्ज – कभी तेरा दामन ना छोड़ेंगे हम .....

टेक : दिन रात बाट देखा करते आज वोहे दिन आग्या।
ठहर सका ना दुश्मन अपणी पूंछ दबा कै भाग्या।।

(1) पन्द्रह अगस्त सन् सैंतालीस नै होगया देश आजाद।
नहीं किसै तै भूल्या जागा यो दिन रहैगा याद।
देश के हालात बिगड़गे आजादी कै बाद।
जो आणा चाहिये था उतणा आया नहीं स्वाद।
जाता–जाता जात–पात का खोटा जहर फैलाग्या।।

(2) हिन्दू और मुसलमान फेर आपस मै झगड़े।
झगड़े कारण पता नहीं कितने घर उजड़े।
छोटे–छोटे बालक अपणे माता–पिता सैं बिछड़े।
गान्धी जी की रोई आत्मा देखैं खड़े–खड़े।।
होग्या घटिया काम किसै नै आच्छा कोन्या लाग्या।।

(3) किसै की भी मान्या कोन्या वो जिन्ना चाल्यै करग्या।
हिन्दू मुस्लिम दुश्मनी की नीवं वोहे तो धरग्या।
दूनियाँ तै दुख देणा था खुद करग्या उसी भरग्या।
कुछ भी नहीं देखण पाया बिन आई में मरग्या।
तो भी जिन्ना पाकिस्तान एक न्यारा देश बणाग्या।

(4) गुलामी का दुख दूर हुया जो सारी हाणा था।
हमनै न्यारे पाड़ गया उस नै तै जाणा था।

इस काम को करण का उसका लक्ष्य पुराणा था।
न्यारे–न्यारे पाड़ कै पाकिस्तान बणाणा था।
जगन्नाथ वो म्हारी फूट का दुश्मन फायदा ठाग्या।।

[16]

वार्ता

विभाजन के बाद देश में बड़े पैमाने पर हुई मारकाट से चौ. रणबीर सिंह बहुत दुखी हुए। गांधी जी को लेकर रोहतक, मेवात के घासेड़ा और पानीपत पहुंचे व दंगे रूकवाने के लिए भरपूर कोशिश की । सारे हालात पर रणबीर सिंह ने अपना दुख कुछ इस तरह व्यक्त किया–

तर्ज – न्यूं तैरै आगै रोणा पड़ग्या, मेरे बालकपन का .....

टेक : आपस के झगड़े तैं देश में भारी हाणी होगी।
सहज–सहज सब भूल गये वै बात पुराणी होगी।।

(1) देश की बाग डोर गान्धी नै नेहरु तैं पकड़ाई।
नेहरु जी नै सोच समझ कै अपणी सरकार बणाई।
शान्ति के देवता ने बड़ी शान्ति दिखलाई।

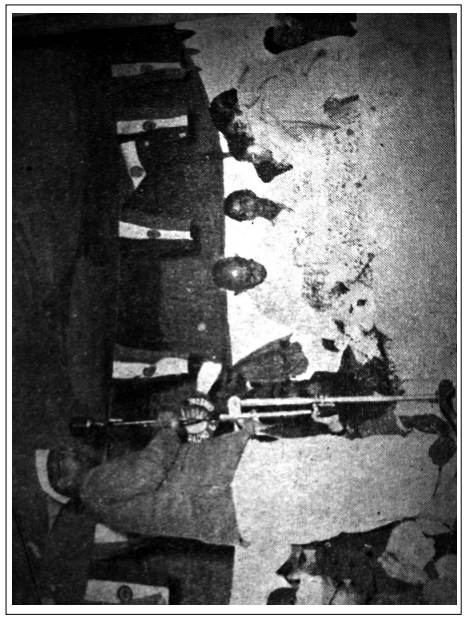

घासेड़ा (मेवात) में गांधीजी की सभा. मंच पर चौधरी साहब भी बैठे हैं। ये सभा
चौ. यासीन खां तथा चौ. रणबीर सिंह ने आयोजित की थी

लोक सभा में करी घोषणा हम सब भाई–भाई।।
किसै समझदार की कही हुई या साची बाणी होगी।।

(2) जो हौंणा था ज्यान माल का हो लिया नुकसान।
आगै नहीं हौण पावै तुम इतणां रखियो ध्यान।
सभी दलों के श्रेष्ट पुरुष बड़े अच्छे बुद्धिमान।
सोच समझ कै त्यार करो देश का संविधान।
फेर सदस्य बणन की खातिर खींचाताणी होगी।।

(3) बड़े–बड़े लोग संविधान सभा में जाणा चाहवैं थे।
हाई कमान कै धोरै अपणी साख बणावैं थे।
खुद दफ्तर मैं जा–जा पर्चे भर–भर आवैं थे।
जब रणबीर सिंह को चुना गया सब खड़े लखावैं थे।
रणबीर सिंह के जीवन की या अमर कहाणी होगी।।

(4) आज काल इन कवियाँ की भी हो रही भरमार।
उल्टे सीधे हरफ धरे बस हुं रागनी त्यार।
गाणां गाणे आले भतेरे आच्छे कलाकार।
पर कोये–कोये समझै से या कविता आली सार।
जगन्नाथ तूँ सादा रहग्या या दुनियाँ श्याणी होगी।।

[17]

वार्ता

10 जुलाई 1947 को चौ. रणबीर सिंह आम राय से संविधान सभा के सदस्य चुने गए। 6 नवम्बर 1948 को वे सभा में अपने मुद्दों को लेकर पहली बार जोरदार ढंग से गरजे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा,

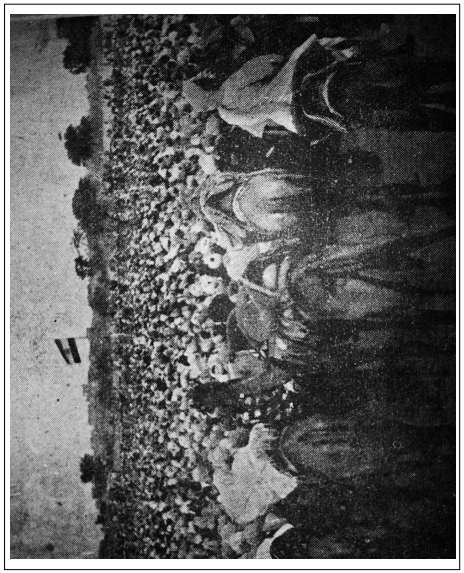

महात्मा जी की घासेड़ा सभा में उमड़ी मेलों की भीड़

हरियाणा राज्य की मांग, गौ–हत्या पर रोक, धर्म के नाम पर आरक्षण का विरोध और सत्ता के विकेन्द्रीकरण की मांग पूरे जोर–शोर से उठाई। 18 नवम्बर 1948 को फिर अलग हरियाणा बनाने की मांग उठाई। उन्होंने संविधान सभा के सामने किसान के हक में अपना पक्ष जोरदार ढंग से प्रकट किया।

तर्ज – दरिया कै किनारै रानी खड़ी थी .....

टेक: इतणा भारी भेदभाव ना म्हारी समझ मैं आया।
संविधान सभा में रणबीर सिंह ने ऊचाँ बोल सुणाया।

(1) किसान और अनुसुचित जाति ये दोनों वर्ग कमावैं।
जितणे पूंजीपति देश मैं सारे मौज उड़ावैं।
बेमतलब के गरीबों पै नये नये टैक्स लावैं।
गरीब और किसान नै ये सारे खाणां चाहवैं।
आज देश मैं सब से ज्यादा जा सै गरीब सताया।।

(2) पूंजीपति के आय.कर में दो हजार तक छूट।
एक बिघा भूमि आले किसान नै रहे लूट।
मनै सही हकीकत बतलादी नहीं जरा भी झूठ।
इस विरोध की आवाज देश मै पहूँची चारों खूँट।
भरी सभा के स्यामीं आपणा सारा दर्द बताया।।

(3) गरीब की गेल्याँ कोन्या ठीक व्यवहार हो र्‌हा।
किसान बेचारा सब तरियाँ लाचार हो र्‌हा।
ये जो कुछ हो रहा मेरी समझ से बाहर हो र्‌हा।
ये सरासरी अन्याय और अत्याचार हो र्‌हा।
किसै तरहाँ भी गरीब आज तक संभल नहीं पाया।।

(4) कहणे लायक बात नै मैं जरुर कहूँगा।
इस अन्याय की पीड़ा नै मैं कैसै सहूँगा।

जगन्नाथ बात मैं सब के मन की लहूँगा।
गरीब के हक की लड़ाई लड़ता रहूँगा।
गरीब का तै प्यार मेरे हृदय बीच समाया।।

[18]

वार्ता

वक्त बीतता गया। संविधान बनने के बाद चौधरी साहब सांसद बने। सांसद रहने के बाद सन् 1962 में चौ. रणबीर सिंह पंजाब विधान सभा के सदस्य चुने गए। सरदार प्रताप सिंह कैरो ने उन्हें पंजाब प्रान्त में बिजली तथा सिचाई मन्त्री बनाया तो उनके कार्यकाल की व्याख्या इस तरह की–

तर्ज – महफिल कै म्हां मिले महात्मा पूरे संत ३७

टेक : ऊपर तैं था राजनीतिज्ञ और दिल से था परम फकीर।
रै वो सन् बासठ में बणा पहली बार वजीर।

(1) पंजाब प्रान्त में कैरो जी की बणी दोबारा सरकार।
रणबीर सिंह को सौंप दिया बिजली पाणी का भार।
कोये काम इन्कार करण की ना थी कदे तैं तासीर।।

(2) चार्ज लेते ही आया एक दम मन में इसा बिचार।
सबसे पहले करणा होगा बिजली का सुधार।
सारे एकसार समझे चाहे निर्धन चाहे अमीर।।

(3) कोये कमी नहीं पावैगी इब किसी भी काम में।
बिजली जाणी चाहिये ईब हर एक गाम में।
फिरे सर्दी गर्मी बरसात घाम में देख्या नहीं शरीर।।

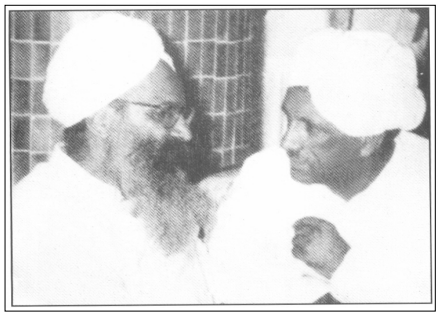

चौधरी साहब प्रतापसिंह कैरों के साथ

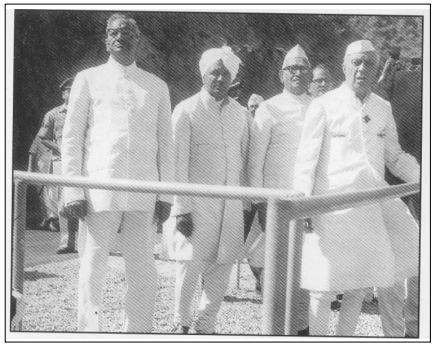

चौधरी साहब पं. जवाहरलाल नेहरू के साथ
भाखड़ा के लोकार्पण पर

(4) जगन्नाथ नै सतगुरु जी खुद गये थे समझाकै।
सब की मुश्किल दूर करूँ मैं गाम गाम जाकै।
किसै किस्म के लोभ में आकै बेची नहीं जमीर।।

[19]

वार्ता

एक नवम्बर सन् 1966 को पंजाब का पुर्नगठन हुआ। और हमारा अपना अलग राज्य बन गया – 'हरियाणा'। कुछ दिन के बाद नये चुनाव हो गए। चौधरी साहब का मन कुछ दुखी रहने लगा, क्योंकि उन दिनों निहित स्वार्थ ने सामाजिक माहौल को काफी गन्दा कर दिया था। इसलिये नई सियासत व नई बातें चौधरी साहब को अच्छी नहीं लगती थी। अतः वह राज्य सभा में आ गए। वहां खूब गाँव, गरीब की वकालत की। 1978 में राज्य सभा का कार्यकाल समाप्त होते ही उन्होंने 64 साल की आयु में सक्रिय चुनावी राजनीति से संन्यास ले लिया–

तर्ज – तुम कहया करो थे पियाजी, सै कृष्ण .....

टेक: राजनीति के प्रदुषण से चित रहणे लगा उदास।
चौ. रणबीर सिंह नै लिया राजनीति से संन्यास।।

(1) संन्यास लिया जब रणबीर सिंह था 64 साल का।
ना भूखा था धन माल का, आदमी था और ख्याल का,
था हंस गहरे ताल का, जो मूल चरै ना घास।।

(2) सोच समझ के अपणी बुद्धि से जो भी काम किया।
किसी से कुछ भी नहीं लिया, वो प्याला सबर का पीया,
सब कुछ दिल से त्याग दिया, जो कुछ भी था पास।।

(3) बहोत से नेता इस कुर्सी कै इसे चिपट जाते।
माल सब सरकारी खाते, किसै तैं भी ना शरमाते,

वै कुर्सी नहीं छोड़णा चाहते, और आवै टूटमा सांस।।

(4) इस परमार्थ के काम करण की लग्न लगाई सै।
बस मन में याहे आई सै, ना करणी और कमाई सै,
यही दवा बतलाई सै, इस दूनियाँ में खास।।

[20]

वार्ता

अपने जीवन काल में रणबीर सिंह सारे देश में सात सदनों के चुने हुए सदस्य रहने वाले इकलौते व्यक्ति थे। उनकी इस उपलब्धि को कवि ने कुछ इस तरह पेश किया–

तर्ज – आनंद होण लगे काया मै .....

टेक : दुनियाँ के लोकतन्त्र की है ये बहोत बड़ी तहरीर। राजनीति की सात सभाओं का मैम्बर था रणबीर।।

(1) सन् सैंतालिस में संविधान सभा का मान्य सदस्य बणा।
बड़े–बड़े दिग्गज छोड़ दिये और रणबीर सिंह चुणा।
सब बातों नै समझै था वो श्याणा था बहोत घणा।
सभी जगह मजबूत बणाया उसने पक्ष अपणा।
ऊपर तै दिखे सादा भोला था अन्दर से गंभीर।।

(2) इसके बाद संविधान सभा बणी लोक सभा अस्थाई।
इन दोनों सभाओं में अपणी हाजरी लाई।
बड़े गौर से देखा करता वो सभा की कार्यवाही।

श्री राजीव गांधी के साथ

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति श्री नेल्सन मंडेला के साथ

गरीब के हित की आवाज उसनै सभी जगह ठाई।
इन बेचाराँ की तोड़ दो या गुलामी की जंजीर।।

(3) लोक सभा के सदस्य बणे हुई लोक सभा तैयार।
हरियाणा अलग राज्य का मुद्दा ठाया कई–कई बार।
फेर पंजाब विधान सभा में आगे करकै खूब विचार।
कैबनिट स्तर का रहा मन्त्री थी कैरों की सरकार।
नहीं कोये नाजायज सताया रहा जितणे दिन वजीर।।

(4) सन् 66 में हरियाणा जब न्यारा राज्य बणाया।
हरियाणे की विधान सभा में भी अपणा नाम लिखाया।
देश की राज्य सभा का भी मान्य सदस्य कहलाया।
सात सभाओं का मैम्बर दुनिया में रणबीर पाया।
सांप लिकड़ गया जगन्नाथ इब पीटैं सहम लकीर।।

[21]

वार्ता

समय बीतता गया। 2005 में जब चौ. रणबीर सिंह के बेटे भूपेन्द्र सिंह हुड्डा हरियाणा के मुख्यमन्त्री बनकर पिताजी से आशीर्वाद लेने गये तब चौधरी साहब ने अपने बेटे को राजधर्म का संदेश कुछ इस तरह दिया –

तर्ज– एक बाहर भिखारी आया .....

टेक : फैलज्या आप कीर्ती तेरी, मत करिये हेरा फेरी,
न्याय करिये सब के साथ, कदे राज नशे में टूलज्या।।

(1) करणा है सब का उपकार, यही है जीवन का आधार,

श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा मुख्यमंत्री हरियाणा बनने पर अपने पिताजी का आशीर्वाद लेते हुए

मतना कार व्यवहार बदलना, सब एक सार समझ कै चलना,
यो सब खेल समय के हाथ, कदे संस्कार नै भूलज्या।।

(2) बड़े संघषों तैं या बात बणी, मानिये मतना खुशी घणी,
समझै अपणी रैयत सारी, ना राजा से प्रजा न्यारी,
और ना कोये जात जमात, कदे पींघ पाप की झूलज्या।।

(3) हो आछे काम का आच्छा फल, पैर तूँ धरिये संभल–संभल,
जब दिल गरीब का दुखैगा, अपणा गात साथ सूकैगा,
जो करै जनता गेल दुभात; वो राजा छोड़ असूलजा।

(4) सब के भले मैं अपणा भला, ये है सब से उत्तम कला,
सब से गात मिला के चलिये, मतना कहे बचन से टलिये,
कदे करा कराया जगन्नाथ, यो बिना ऐ बात फिजूल जा।

[22]

वार्ता

अपने पिता की नसीहत को पल्ले से गांठ बांध कर भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने पिता के चरणों में बैठ कर उन्हें यह भरोसा दिया–

तर्ज– है प्रीत जहां की रीत सदा .....

टेक : हर एक बात की गांठ मारली मैं हरगिज नहीं भूलाऊँगा।
मैं भूप बणूँ जनता के मन का जब भूपेन्द्र कहलाऊँगा।।

(1) सारी बात करी स्वीकार, चलूँगा थारे कहे अनुसार,
करूँगा सब जनता से प्यार, कभी ना किसी को सताऊँगा।
जनता खुश होज्यागी ऐसे करकै काम दिखाऊँगा।।

चौ. साहब के पौत्र श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा, सांसद
रोहतक

(2) दिखाऊँ कोन्या अपणी सरदारी, बहोत बड़ी समझूँ जिम्मेवारी,
नेक नीति और इमानदारी, से इस राज नै चलाऊँगा।
मत घबराओं थारा पूत सूँ कितै खोट में नहीं आऊँगा।।

(3) कहे बचन से नहीं फिरूंगा, ना कदे उल्टा कदम धरूँगा,
जितणा होगा भला करूँगा, ना बुरा किसी का चाहूँगा।
पूरे राज्य में खशबोई के फूल खिलाऊँगा।।

(4) कहरा दिल से जगन्नाथ, चाहे मेरा मिट भी जाइयो गात,
पूरी निष्टा के साथ, आप का बचन भी निभाऊंगा।
पर जिन्दगी भर मैं कर्ज आप का नहीं चुका पाऊंगा।।

[23]

वार्ता

जब पौत्र दीपेन्द्र सिंह हुड्डा 2005 के अंत में देश भर में रोहतक से लोकसभा के सबसे युवा सांसद चुने गये तो वे आर्शीवाद लेने अपने दादा के पास पहुंचे। दीपेन्द्र को सीने से लगाते हुए गद–गद हुए चौ. रणबीर सिंह ने उन्हें नसीहत कुछ इस तरह दी–

तर्ज– चौगरदे नै भील खड़े .....

टेक : उस सभा में तेरे दादा का रुतबा इतणां ध्यान राखिये तूँ।
भूपेन्द्र टहणी तूँ पत्ता इस पेड़ का मान राखिये तूँ।

(1) जुग–जुग जीओ लाल मेरे यो दादा का वरदान सै।
नादान उमर में एम.पी. बणग्या वो राजी खुद भगवान सै।

श्रीमती सोनिया गांधी, चौधरी साहब के परिवार के सदस्यों के साथः बायें से पुत्र वधु श्रीमती सरोज हुड्डा, पुत्र वधु श्रीमती आशा हुड्डा, पौत्र दीपेन्द्र सिंह (सांसद), धर्मपत्नी श्रीमती हरदेई, श्रीमती सोनिया गांधी, चौधरी साहब, पुत्र भूपेन्द्र सिंह हुड्डा (मुख्यमंत्री, हरियाणा), पौत्र सुरेन्दर सिंह, पुत्र जोगेन्द्र सिंह हुड्डा

ईश्वर नै इसा पोता दिया ये उनका ऐ अहसान सै।
एम.पी. मैं भी बणा था बेटा ना दिल मैं अभिमान सै।
बड़ा ओहदा मिलग्या पर इस कुल की आन राखिये तूँ।।

(2) तेरी जीत की खुशी में बेटा फूल्या नहीं समाऊ मैं।
इस रोहतक की जनता का क्यूकर कर्ज चुकाऊँ मैं।
ऊँची गर्दन करदी म्हारी सौ–सौ सुकर मनाऊँ मैं
जनता की सेवा करिये न्यूँ बार–बार समझाऊँ मैं।
या कुर्सी जनता नै सौंपी सै बस इतणा ज्ञान राखिये तूँ।।

(3) सच्चा नेता बणकै तनै जनता का कष्ट मिटाणा सै।
मेर तेर में फंसकै कदे ना भेदभाव दिखलाणा सै।
म्हारै लेखै एक कुटुम्ब यो साराऐ हरियाणा सै।
नेता होकै फर्क करै तै कितै डूब मर जाणा सै।
अपणे बाप और दादा की उजली श्यान राखिये तूँ।।

(4) कितै बुराई मत लेणां ना कोये काम गलत करणा सै।
सब तरियाँ के मनुष्य मिलैं सब का पेटा भरणां सै।
सत्य का साथी रहै हमेशा फेर क्यां तैं डरणां सै।
सदा नहीं कोये रहता एक दिन सब नै मरणा सै।
कहै जगन्नाथ इस उदेश की खातिर हाजिर ज्यान राखिये तूँ।।

[24]

वार्ता

साथियों दुनियाँ में जो आया है उसे एक दिन जाना है। चौ. रणबीर सिंह के साथ भी ऐसा ही हुआ और वे एक फरवरी 2009 को 95 साल की उम्र में स्वर्ग सिधार गए। उनके निधन पर कवि

ने हालात का विवरण कुछ इस तरह दिया –

तर्ज– आज का बोल्या याद राखिए विक्रम .....

टेक: नौ का साल दूसरा महिना तारिख पहली आई।
सूरज भी मन्दा पड़ग्या और धरती भी थर्राई।।

(1) मृत्यु आगै बड़े–बड़े सर्जन भी हार गये।
कोन्या पार बसाई सारे हो लाचार गये।
इस भारत के संविधान के शिल्पकार गये।
चौ. रणबीर सिंह जी सांघी आले स्वर्ग सिधार गये।
खबर सुणी जब सब के दिल पै घोर उदासी छाई।।

(2) बड़े–बड़े महापुरुष खड़े थे जितणे मिन्त्र प्यारे।
दिल में भारी दुख था सब के चेहरे भी मुरझारे।
कितणे दिन तक साथ रहे इब होगे न्यारे–न्यारे
बड़े–बड़े योधा और राजा मृत्यू आगै हारे।
सारा परिवार पास में बैठा पर कोन्या पार बसाई।।

(3) काल बली आ चढ़ा शीश पै रोप गया चाला।
खोस लिये आज मातृभूमि का सच्चा भगत निराला।
बड़े सहनशील और दूर दृष्टि था सब का देखा भाला।
दिल में हर दम याद रहैंगे रणबीर सिंह सांघी आला।
तीन लोक में धूवां पहूँचा जब आग चिता में लाई।।

(4) गिण नहीं सकते उतणी जनता दर्शन खातर आगी।
किसै के तन मै किसै के मन मै किसै कै हीक में लागी।
चौ. रणबीर सिंह की जीवन गाथा दुनियाँ में गाई जागी।
नहीं किसै के हाथ बात या मौत तै सबनै एं खागी।
सच बूझै तै जगन्नाथ या हौंणी ए बड़ी बताई।।

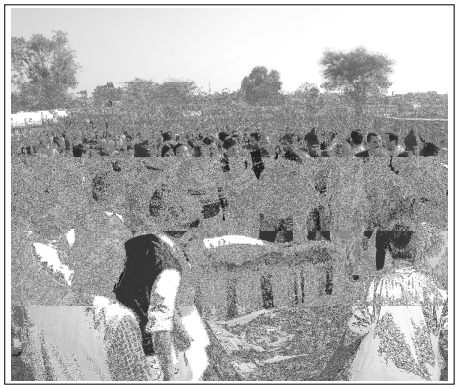

स्वतंत्रता संग्राम के महायोद्धा की अन्तिम महायात्रा। 2 फरवरी 2009 को उनका पूरे राष्ट्रीय सम्मान के साथ संविधान स्थल, रोहतक पर अंतिम संस्कार किया गया

श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा, मुख्यमन्त्री हरियाणा, अपने पूज्य पिताजी की अस्थियां भाखड़ा में विसर्जित करते हुए। (4 फरवरी 2009)

[25]

वार्ता

चौ. रणबीर सिंह के दाह संस्कार पर लोगों का जन सैलाब उमड़ पड़ा। सब की आंखों में आंसू थे, और जबान पर उनके जीवन व शिक्षाओं को अपनाने का संकल्प। सारे हालात का बखान पं. जगन्नाथ ने कुछ इस तरह किया–

तर्ज– एक चीज मांगते हैं हम तुम से .....

टेक: संघर्षों की राही जो दिखा गये रणबीर।
उसै राह पै चलकै लिखां खुद अपणी तकदीर।।

(1) जो भी हमने शिक्षा पाई वा बेकार नहीं जावैगी।
सोच समझ कै काम करैं कोये गलती ना पावैगी।
रस्ता आप दिखावैगी, या री हृदय में तस्वीर।।

(2) जुणसा मार्ग बता दिया हम उसनै ना छोड़ेंगे।
जो मर्यादा बांध गये उन्हैं मूल नहीं तोड़ैंगे।
थारा बचन नहीं मोड़ैंगे, ये फैसला हरबार।।

(3) जब तक जीवैं थारे नाम की कीर्ती फैलावांगे।
आपस में हम रहैं प्रेम से नाम आपका चलावांगे।
हम देश भगत कहलावांगे, चाहे मिटज्या शरीर।।

(4) जनता का उपकार करैंगे यो पक्का प्रण निभाणां सै।
आपत्ति में संघर्षों से कभी नहीं घबराणा सै।
जगन्नाथ सब नै जाणा सै, हम सब हैं राहगीर।।

———